पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

वर्ष २९ अंक-३७ सोमवार, ४ मई २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये इंदौर,मुंबई से एक साथ प्रकाशित

भारतीय स्टेट बैंक ने घटाई जमा पर ब्याज दर

मुंबई। देश के सबसे बड़े ऋणदाता भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने जमा दरों में 0.25 फीसदी की कमी की है। जमा पर संशोधित ब्याज दरें चार मई से प्रभावी होंगी। नई दरों में एक वर्ष और दो वर्ष से कम अवधि की जमा पर 7.5 फीसदी का ब्याज मिलेगा जो पहले 7.75 फीसदी था। एसबीआई द्वारा जारी बयान में कहा गया है कि दो वर्ष और एक हजार दिन से कम की अवधि पर 7.75 फीसदी ब्याज मिलेगा, जो पहले 8 फीसदी था। इसी प्रकार एक हजार दिन की अवधि वाले फिक्स डिपॉजिट (एफडी) पर 8 फीसदी का ब्याज बैंक देगा। इसके अलावा बैंक एक हजार दिन से ज्यादा और तीन वर्ष से कम अवधि एवं तीन से पांच वर्ष की पूर्णावधि वाली एफडी पर 7.75 फीसदी का ब्याज देगा। इससे पहले इस पर 8 फीसदी का ब्याज देय था।

उम्मीद के सहारे

सम्मानित नौजवान और खुशहाल किसान के नारे के साथ प्रधानमंत्री ने आखिरकार पाकिस्तान को दोस्ती के जामें के भीतर संभल कर रहने की धमकी दे ही दी। मनमोहन हालांकि एक ऐसे बुद्धिजीवी वर्ग से हैं जो कम से कम टिप्पणी करके अपनी बात रखते हैं। इस चुनावी बेबाकियों के दौरान पिछले एक हफ्ते में मैं कई लोगों से मिला। ऐसे लोग जो कॉर्पोरेट वर्ल्ड से दूर हैं। उनके लिए अरबो-खरबों की बातें सपने के समान हैं या फिर फिल्मी दुनिया में देखे जाने वाली कोई खुबसूरत अपस्केल सी कहानी हो। इन लोगों के लिए जहां झुलसा देने वाली गर्मी और पानी की कमीं आज की सबसे बड़ी समस्या है। हर रोज सुबह पानी के

उत्तम झंवर

टैंकर के पीछे लगाई जाने वाली दौड़ और दिनभर तपते सूरज के बीच कहीं बच्चों की बढ़ती जा रही स्कूल फीस के लिए बचत करने की जद्दोजहद है। कहीं चुनाव के बाद होने वाली बिजली की कटौती की और बढ़ जाने वाले किराने के दामों की चिंता। इन लोगों के मन में तो ऐसी सरकार की कल्पना है जो इस साल इंजीनियर हुए नौकरी के लिए भटकते नौजवानों को अच्छी नौकरी दिला सके। या फिर भरपूर पानी और बिजली की व्यवस्था कर ट्रांसपोर्टेशन को सुधार सकें। कश्मीर से कन्याकुमारी तक ट्रांसपोर्ट को व्यविस्थत बना कर जिंदगी के पहियों को सुगमता से चला सके।

वहीं तपती दुपहरियों में आग बरसाते नेताओं और अभिनेताओं से कोई सारोकार नहीं। इन लोगों को सुनने आने वालों में से तो ज्यादातर बसों में भर कर लाए गए लोग होते हैं। मिडिल क्लास तो अमरसिंह, मायावती और लालू के डायलॉग सुनकर केवल अपना टीवी चैनल ही बदलना पसंद करता है। ग्रेट इंडियन पॉलिटिकल थियेटर में मुन्ना भाई की मायावती को लेकर गांधीगिरी के बजाय आईपीएल में गांगुली को जीरो पर बोल्ड होते देखना ज्यादा पसंद कर रहे हैं। इंदौर की चुनावी सरगर्मियों में सुमित्रा ताई के खिलाफ लॉबिंग और सत्तूभाई के समर्थन के बीच महिलाओं की एक ठेठ कांग्रेसी टोली ने महिला होने के कारण ताई को ही अपना समर्थन दिया। नतीजे चाहे जो भी रहे केंद्र की सरकार ही लोगों के भविष्य को कुछ बेहतर बना पाएगी। बस एक खुशियों भरी लहर की उम्मीद लगाए हर कोई किनारे बैठा है...।

पहली बार लोकसभा चुनाव में कोई मुद्दा नहीं उभर पाया है, मुद्दों के बजाय आरोप- प्रत्यारोप और व्यक्तिगत छींटाकशी ही महत्वपूर्ण रूप से उभरी है. अब जब तीन चौथाई सीटों पर मतदान हो चुका है तब भी दोनों प्रमुख दलों सहित देश के अन्य दल मतदाताओं के सामने मुद्दों की कोई सार्थक बहस शुरू नहीं कर पाए. महंगाई, बेरोजगारी, विकास, आतंकवाद, परमाणु करार, विदेश नीति से लेकर घरेलू मोर्चे पर सरकार की सफलता-असफलता की चर्चा के बजाय चुनाव कमजोर प्रधानमंत्री और मजबूत नेतृत्व के बीच ही उलझा रहा,वाक युद्ध इतना विकृत हो उठा है कि शालीन प्रधानमंत्री को भी हमलावर तरीके से जवाब देना पड़ा है.

चुनाव में मुद्दे गौण

आरोप-प्रत्यारोप का

चुनाव के दौरान मुख्य प्रतिद्वन्द्वी दलों के बीच आरोपों-प्रत्यारोपों के बाण चलना स्वाभाविक है। लेकिन इस बार के लोकसभा चुनाव में दो मुख्य प्रतिद्वंद्वियों- कांग्रेस और भाजपा के बीच मुद्दे गौण हो गए और उनकी जगह व्यक्तिगत छींटाकशी ने ले ली है। पिछले पांच साल से कमजोर प्रधानमंत्री और कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के हाथों की कठपुतली के आरोप सुनते आ रहे मृदुभाषी मनमोहन सिंह ने 'सौ सुनार की एक लोहार की' की तर्ज पर भाजपा में लौह पुरुष कहे जाने वाले लालकृष्ण आडवाणी पर ऐसा पलटवार किया कि सभी आश्चर्यचकित रह गए। सिंह ने बहुत ही चतुराई से कंधार विमान अपहरण, जिन्ना यशगान, संसद पर आतंकी हमले, गुजरात दंगे और बाबरी मस्जिद ध्वंस जैसे ऐसे विषय उठाए जो आडवाणी की दुखती रग हैं। प्रधानमंत्री के इस अप्रत्याशित तीखे हमले का आडवाणी या भाजपा की ओर से जवाब नहीं दिए जाने के बारे में भगवा दल के वरिष्ठ नेता अरुण जेटली ने कहा कि प्रधानमंत्री इतने व्यक्तिगत स्तर पर उतर आए हैं कि आडवाणी या भाजपा उसे जवाब देने लायक नहीं मानती। ये अलग बात है कि चुप्पी साधे आडवाणी का मानना है कि व्यक्तिगत हमले का निशाना बनने वाले व्यक्ति को चुनावी लाभ मिलता है। जेटली ने कहा कि प्रधानमंत्री को अपना दर्जा तय कर लेना चाहिए। उन्हें यह चुन लेना चाहिए कि वह राजनेता बनना चाहते हैं या आम राजनीतिक। उन्हें जैसे को तैसा का रवैया नहीं अपनाना चाहिए।

उधर कमजोर पीएम के भाजपा के आरोपों का जवाब देते-देते लगता है कि कांग्रेस पिछले पांच साल की अपनी कृषि ऋण माफी आरटीआई जैसी संप्रग सरकार की उपलब्धियों को गिनाना भूल गई। कांग्रेस का कहना है कि उसे भाजपा के व्यक्तिगत आरोपों से आजिज आकर जवाब देने को मजबूर होना पड़ा है। कमजोर पीएम के आरोपों पर कांग्रेस के पलटवार के बाद चुप्पी साधे आडवाणी ने अब कहा है कि व्यक्तिगत हमले में निशाना बनने वाले शख्स को ही लाभ होता है और इसीलिए उन्होंने मनमोहन, सोनिया और राहुल द्वारा उन्हें निशाना बनाए जाने पर चुप्पी साधना ही बेहतर समझा है। उनका कहना है कि पूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी पर भी आपातकाल के बाद विपक्ष ने कड़ा हमला किया था जिसका उन्हें नुकसान की बजाय फायदा हुआ। इंदिरा गांधी का यह नारा उनके चुनाव जीतने में मददगार साबित हुआ था वो कहते हैं इंदिरा हटाओ मैं कहती हूं गरीबी हटाओ।

कम मतदान, दल परेशान

तीसरे चरण में भी देश की सरकार चुनने का उत्साह आम मतदाता में जग नहीं पाया जिसके चलते आधे मतदाताओं ने ही अपने मताधिकार का प्रयोग किया. आधे से ज्यादा वोट न डालने वालों में वे भी मतदाता शामिल हैं जो चुनाव में पहली या दूसरी बार वोट डालने वाले थे. इन युवा मतदाताओं पर ही चुनाव नतीजे निर्भर थे और उन्हें मतदान केन्द्र तक पहुंचाने के लिये सरकार, चुनाव आयोग एवं राजनीतिक दलों ने भारी-भरकम प्रचार अभियान भी चलाया गया मगर मतदान के आंकड़े बताते हैं कि उनका यह अभियान नाकामयाब रहा. युवा मतदाताओं की इस अरूचि के चलते चुनाव के सारे गणित गड्ड-मड्ड है. कोई भी दल या प्रत्याशी यह कहने की स्थिति में नहीं है कि वह चुनाव जीत ही जाएंगे. कुल मिलाकर सब कुछ भाग्य भरोसे है और भाग्य बंद है. ईवीएम में जो 16 मई को ही फैसला सुनाएगी.

शेष पेज 16 पर .....